

# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

अप्रैल - I - 2023



अंक - 01

माउण्ट आबू

Rs.-12

**कार्यक्रम :** व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े लोगों के लिए ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'रिट्रीट'

## जीवन में बिना संतुलन सफलता और विकास नहीं

श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी ही वास्तव में है सर्वश्रेष्ठ - ब्र.कु. गीता

'बैलेसिंग लाइफ विद ब्लिसफुल सेल्फ' सम्मेलन

1500 से अधिक व्यापार और उद्योग जगत से जुड़ी हस्तियों ने लिया लाभ

पैनल डिस्कशन के माध्यम से आध्यात्मिकता से जुड़े कई विषयों पर हुई गहन चर्चा

सभी को राजयोग का विशेष अभ्यास कराया गया

**ओ.आर.सी.-गुठगाम।** ब्रह्माकुमारीज के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'बैलेसिंग लाइफ विद ब्लिसफुल सेल्फ' विषय पर आयोजित



सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए फरीदाबाद के एसडीएम पंकज सेतिया। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी एवं सम्माननीय अतिथिगण।

त्रिदिवसीय सम्मेलन में व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़ी अनेक हस्तियों ने शिरकत की। दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू से आई मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी ने कहा कि आज प्रतियोगिता के इस दौर में तनाव होना संभव है। लेकिन अगर हम जीवन में संतुलन बनाकर चलते हैं तो सहज ही तनाव मुक्त रह सकते हैं। जिसके लिए सबसे जरूरी है आध्यात्मिक शक्ति। शांति, धैर्य और आंतरिक शक्ति आध्यात्मिक ज्ञान और योग से ही प्राप्त होती है। दीदी ने कहा कि भौतिक सम्पत्ति

के साथ-साथ अच्छे शब्दों की सम्पत्ति भी जरूरी है। श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी ही वास्तव में सर्वश्रेष्ठ है। समय सबसे बड़ा धन है। स्थूल धन चला भी जाए तो दोबारा कमा सकते हैं, लेकिन समय रूपी धन दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता।

### मूल्यनिष्ठ व्यापार से ही होगा खुशहाल जीवन

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि व्यापार और उद्योग की हमारे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारी संस्कृति देवी संस्कृति रही है। जिसके मूल में दाता पन की

भावना प्रमुख है। लेकिन आज ज़्यादातर जगह शोषण की प्रवृत्ति बढ़ गई है। व्यापार अगर मूल्यनिष्ठ होगा तो खुशी होगी। जहां मूल्य हैं वहां सफलता अवश्य होती है। संस्थान के फरीदाबाद स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि योग से ही जीवन में संतुष्टि आती है। आज बहुत से उद्योगपतियों ने योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया है। साथ ही अपनी इंडस्ट्री में उन्होंने विशेष राजयोग कक्ष भी बना रखा है। ब्र.कु. ख्याति बहन ने बताया कि सम्मेलन का उद्देश्य सभी को राजयोग द्वारा संतुलित जीवन शैली सिखाना है।

### इन्होंने भी साझा किए अपने अनुभव

फरीदाबाद के एसडीएम पंकज सेतिया ने कहा कि कार्य तभी अच्छा होता है, जब हम आनंदित होते हैं। खुशियों के साथ किया हर कार्य सबको खुशियां प्रदान करता है।

सुनील हेल्थ केयर लिमिटेड के अध्यक्ष अनिल खेतान ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज ने हमें उद्योग में योग सिखाया है। सकरनी प्राइवेट लिमिटेड के एमडी डॉ. अशोक गुप्ता ने कहा कि आज हम दुनिया के बारे में तो जानते हैं लेकिन स्वयं को नहीं जानते। संतुलित जीवन जीने के लिए स्वयं का ज्ञान जरूरी है।

ऑल इंडिया फोरम ऑफ एमएसएमई के राष्ट्रीय महासचिव अनिल चौधरी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आने के बाद मेरी माताजी के जीवन में एक अदभुत परिवर्तन आया। जिस कारण उनके दृष्टिकोण में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ और सबके साथ उनका व्यवहार बहुत अच्छा होता चला गया।

ब्र.कु. हरीश भाई ने प्रभाग के सेवाओं की जानकारी दी। ब्र.कु. अंजली ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. सुरेंद्र ने सबका धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. अमृता एवं ब्र.कु. पूनम ने किया।

## परिस्थिति में रिएक्ट के बजाए रिस्पॉन्ड करना सीखें - ब्र.कु. शिवानी



होता है। इसलिए दूसरों को बदलने के बजाए पहले स्वयं को बदलना जरूरी है। हर रोज सुबह उठते ही

ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित सम्मेलन में व्यापार एवं उद्योग जगत से जुड़े लोगों को सम्बोधित करते हुए सुप्रसिद्ध जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में रिएक्ट करने के बजाए रिस्पॉन्ड करना सीखें। योग हमें सिखाता है कि हमें किस प्रकार रिस्पॉन्ड करना है। योग मन को संयमित रखता है। योग की स्थिति का प्रभाव हमारे दिन भर चलने वाले कार्य व्यवहार पर पड़ता है। दीदी ने कहा कि बीमारियों का प्रमुख कारण मन के नकारात्मक और अनियंत्रित विचार हैं। आज हम शरीर का इलाज तो करते हैं लेकिन मन के विचारों की क्वालिटी को ठीक नहीं करते। आध्यात्मिकता हमारे विचार और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाती है। आध्यात्मिकता हमें रिएक्शन के बजाए रिस्पॉन्ड करना सिखाती है। उन्होंने कहा कि कोई भी परिवर्तन पहले एक से शुरू होता है। इसलिए दूसरों को बदलने के बजाए पहले स्वयं को बदलना जरूरी है। हर रोज सुबह उठते ही



ईश्वर का धन्यवाद करना जरूरी है। प्रकृति के साथ अच्छा रिश्ता बनाने के लिए रोज उसका शुक्रिया करें। प्रकृति का ध्यान रखने से प्रकृति हमारा ध्यान रखती है। प्रकृति के संसाधनों का उतना ही उपयोग करें जितना जरूरी है। प्रकृति का सम्मान ही हमारी प्रकृति को स्वस्थ रखता है।